بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 10 अप्रेल 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

(शहादत महीने की तिथि 10,1405 हश)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलै. की सीरते मुबारका के हवाले से तौहीदे इलाही का ईमान अफ़रोज़ तज़किरा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 10.04.2026

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला, ने फ़रमाया: अपने आक़ा की पैरवी में हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की तौहीद को क़ायम करने की कोशिश आप (अलैहिस्सलाम) के अमली नमूने और अपने मानने वालों को नसीहतें, और किस तरह उनकी तरबियत फ़रमाया करते थे इसके कुछ वाक़िआत पेश करूँगा।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाया करते थे कि किसी शख़्स का बेटा मर गया और उसका एक दोस्त तअज़ियत (हमदर्दी प्रकट करना) के लिए उसके पास गया, तो वो चीख़ मारकर रो पड़ा और उससे कहने लगा कि अल्लाह ने मुझ पर बड़ा ज़ुल्म किया है गोया उसके ख़याल में उसका कोई हक़ अल्लाह तआला ने मार लिया था। मगर सोचना चाहिए कि वो कौन सा हक़ है जो बंदे ने अल्लाह तआला पर क़ायम किया?

इंसान को हर वक़्त यही ख़याल रखना चाहिए कि जो नेमतें, जो औलाद हमें मिली है, वो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल की वजह से मिली है। और यह बात इस बात का तक़ाज़ा करती है कि हम हमेशा अल्लाह तआला के आगे झुके रहें। उसकी तौहीद का अपने हर क़ौल व फ़ेल (कथनी करनी) से इज़्हार करें और कभी ज़रा-सा भी शिर्क का शाइबा हम में पैदा न हो। कभी यह न समझें कि हमारा कोई हक़ अल्लाह तआला पर है। ज़रा-सी इबादत करने से कोई हक़ अदा नहीं हो जाता, बल्कि हम अपने फ़ायदे के लिए करते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. को अपने बेटे मिर्ज़ा मुबारक अहमद से बड़ी मुहब्बत थी और उसकी बीमारी में आप अलै. ने बड़ी तीमारदारी की। इससे हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि. तक को यह ख़याल था

कि अगर मुबारक अहमद फ़ौत हो गए तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बड़ा सदमा होगा। जब मुबारक अहमद फ़ौत हो गए, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उसी वक़्त निहायत सब्र के साथ दोस्तों को ख़त लिखने लगे कि मुबारक अहमद फ़ौत हो गए हैं, मगर इस पर घबराना नहीं चाहिए। यह अल्लाह तआला की एक मशीयत (मर्ज़ी) थी जिस पर हमें सब्र करना चाहिए। और फिर बाहर आकर मुस्कुरा-मुस्कुराकर तक़रीर करने लगे कि मुबारक अहमद के बारे में अल्लाह तआला का जो इलहाम था वो पूरा हो गया। चुनाँचे आप अलै. का शेर भी है कि –

बुलाने वाला है सबसे प्यारा, उसी पे ऐ दिल तू जाँ फ़िदा कर।

फ़रमाया: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि सुलतान अब्दुल हमीद ख़ान की बहुत-सी बातें ग़लत थीं, मगर एक बात उन्हें बहुत पसंद थी। जब वज़ीरों ने जंग से बचने के लिए मुख़्तलिफ़ कमज़ोरियाँ और मुश्किलात बयान कीं, तो सुलतान ने कहा कि कुछ मामला अल्लाह पर भी छोड़ना चाहिए। इस वाक़िए से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह पर कामिल भरोसे (तवक्कुल) की अहमियत को सराहा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को चक्करों की तकलीफ़ थी। एक तबीब के बारे में सुना गया कि वो इसमें ख़ास महारत रखता है। उसे बुलवाया गया, उसने हुज़ूर अलै. को देखा और कहा कि दो दिन में मैं आपको आराम कर दूँगा। यह सुनकर हज़रत साहब अलै. अंदर चले गए और हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ि. को एक पर्ची पर लिखा कि इस शख़्स से मैं इलाज हरगिज़ नहीं कराना चाहता यह क्या ख़ुदाई का दावा करता है। उसको वापसी किराए के अलावा रुपये और 25 रुपये भेज दिए कि इसे रुख़सत कर दें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है जो उसकी अज़मत व इज़्ज़त के लिए जोश रखते हैं। ऐसे लोग एक बारीक राह से जाते हैं और हर कोई उनके साथ नहीं चल सकता। जब तक अल्लाह के लिए जोश न हो, कोई लज़्ज़त इंसान को हासिल नहीं हो सकती। जब तक इंसान के दिल में अल्लाह तआला के लिए ज़ाती जोश न हो, और नफ़्स की मिलावट और अपने दुनियावी फ़ायदों के ख़याल से इंसान ख़ाली न हो जाए, तब तक उसकी कोई इबादत व सदक़ा क़बूल नहीं होता।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: पस क़बूलियत-ए-दुआ के लिए यह ज़रूरी है कि तौहीद पर कामिल यक़ीन हो और ईमान हो, और अल्लाह तआला से उसकी मुहब्बत हासिल करने के लिए दुआ सबसे पहले हो। जो लोग लिखते हैं कि हमने बहुत दुआ की, हमने यह किया वो किया, नफ़्ल पढ़े, सदक़े दिए, हमारी दुआ क़बूल नहीं हुई, वो ज़रा इस बात पर ग़ौर करें, यह नुस्खा हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने बताया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मुख़ातिब करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया: चूँकि इस ज़माने में तू मेरी तौहीद का अलमबरदार है और तौहीद के खोए हुए ख़ज़ाने को दुनिया में दोबारा क़ायम कर रहा है, इसलिए ऐ मसीह मुहम्मदी! तू मुझे उतना ही प्यारा है जितनी मेरी तौहीद व तफ़रीद। और चूँकि ईसाइयों ने झूठ और बुहतान के तौर पर अपने मसीह को अल्लाह का असली बेटा बना रखा है, इसलिए मेरी ग़ैरत ने तक़ाज़ा किया कि मैं तेरे साथ ऐसा प्यार करूँ जो औलाद का हक़ होता है, ताकि दुनिया पर ज़ाहिर हो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शागिर्द तक अत्फ़ालुल्लाह (अल्लाह के बच्चे) के मक़ाम को पहुँच सकते हैं।

आप अलै. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला चाहता है कि उन तमाम रूहों को जो ज़मीन की मुख़्तलिफ़ आबादियों में आबाद हैं चाहे यूरोप हो चाहे एशिया, उन सबको जो नेक फ़ितरत रखते हैं, तौहीद की तरफ़ खींचे और अपने बंदों को एक दीन पर जमा करे। यही अल्लाह तआला का मक़सद है जिसके लिए मैं दुनिया में भेजा गया हूँ। पस तुम इस मक़सूद की पैरवी करो मगर नरमी, अख़लाक़ और दुआओं पर ज़ोर देने से।

फिर आप अलै. फ़रमाते हैं: मेरी तमाम तर ख़ुशी इसी में है और मेरी बेअसत की असल ग़रज़ यही है कि अल्लाह तआला की तौहीद और रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त दुनिया में क़ायम हो।

एक मौक़े पर फ़रमाया: मेरी बैअत की असल ग़रज़ यही है कि अल्लाह तआला की तौहीद और रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त दुनिया में क़ायम हो।
क़ादियान में हज़रत मसीह मौऊद अलै. के एक ख़ादिम पीराँ दत्ता नाम के थे। सब उन्हें इसी नाम से पुकारते थे। मगर हुज़ूर अलैहिस्सलाम जब बुलाते तो फ़रमाते यानी मेरे पीर अल्लाह का दिया हुआ।

अल्लाह तआला ने इलहामन हज़रत साहब अलैहिस्सलाम को फ़रमाया; ख़ुज़ुत्तौहीद अत्तौहीद या अब्ना-अल-फ़ारिस। यह इलहाम आप अलै. की नस्ल के लिए और हर मानने वाले के लिए है। जब आप अलै. की बैअत में शामिल हो गए तो आप अलै. के बच्चों की नस्ल में शामिल हैं। अगर इसे थामे रखेंगे तो दीन व दुनिया में कामयाबी मिलेगी, वरना न कोई ख़ूनी रिश्ता फ़ायदा देता है, न महज़ बैअत करना फ़ायदा देता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह के मुक़ाबले में इंसान को तअज़ीम दी जाए, इससे सख़्त नफ़रत थी। लिहाज़ा कई मरतबा आप अलै. ने अपने मुतबेईन या हाज़िरीन को मुसाफ़हे के दौरान पाँव छूने से सख़्त मना फ़रमाया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: मैं इस बात का सख़्त मुख़ालिफ़ हूँ कि कोई मेरी तस्वीर खींचे और उसे बुत परस्तों की तरह अपने पास रखे या प्रकाशित करे। मैंने हरगिज़ ऐसा हुक्म नहीं दिया कि कोई ऐसा करे, और मुझसे ज़्यादा बुत परस्ती और तस्वीर परस्ती का कोई दुश्मन नहीं होगा। लेकिन मैंने देखा है कि आजकल यूरोप के लोग जिस शख़्स की तालीफ़ (किताब) को देखना चाहें, पहले उसकी तस्वीर देखने के ख़्वाहिशमंद होते हैं, क्योंकि यूरोप में फ़िरासत के इल्म को बहुत तरक़्क़ी है। और अक्सर वो महज़ तस्वीर देखकर पहचान सकते हैं कि ऐसा दावेदार सच्चा है या झूठा। और वो लोग हज़ारों कोस के फ़ासले की वजह से मुझ तक पहुँच नहीं सकते और न मेरा चेहरा देख सकते हैं। लिहाज़ा उस मुल्क के अहले-फ़िरासत तस्वीर के ज़रिए मेरे अंदरूनी हालात में ग़ौर करते हैं। कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने यूरोप या अमेरिका से मेरी तरफ़ ख़त लिखे हैं और अपने ख़तों में तहरीर किया है कि हमने आपकी तस्वीर को ग़ौर से देखा और इल्म-ए-फ़िरासत के ज़रिए हमें मानना पड़ा कि जिसकी यह तस्वीर है वो झूठा नहीं है। और एक अमेरिका की औरत ने मेरी तस्वीर देखकर कहा कि यह ईसा अलैहिस्सलाम की तस्वीर है। पस इस ग़रज़ से और इस हद तक मैंने इस तरीक़े के जारी होने में मसलहतन ख़ामोशी इख़्तियार की। फ़ोटो और तस्वीरों के ज़रिए इल्म में बहुत तरक़्क़ी हुई है जैसे जानवरों और बीमारियों की पहचान में मदद मिलती है इसलिए इन्हें हराम कहना दुरुस्त नहीं। इस्लाम सिर्फ़ उन कामों को मना करता है जो शिर्क या लग़्वियात की तरफ़ ले जाएँ, न कि वो चीज़ें जो इल्म व फ़ायदे का ज़रिया हों। ता|हम शर्त यह है कि तस्वीरें नेक मक़सद के लिए हों, उन्हें ज़रिया-ए-माअश या बेमक़सद तशहीर न बनाया जाए। क्योंकि इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता बिदअतें और शिर्क पैदा हो सकते हैं, इसलिए एहतियात और एतिदाल (बीच की राह) ज़रूरी है।-إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ

हुज़ूर फ़रमाते हैं: इस तरह की बिदअतें हमारे लोगों में भी शुरू हो रही हैं। बाज़ लोग अपने फ़ौतशुदगान (मरने वाले) की तस्वीरें अपने साथ लगा लेते हैं। बाज़ लोग शादियों के प्रोग्रामों में तस्वीर बड़ी-सी फ़्रेम करवाकर लगा लेते हैं कि यह हमारे फ़ौत हुए बुज़ुर्ग हैं और हमारे साथ शामिल हो गए हैं। यह सब शिर्क है, बिदअत है, इससे बचना चाहिए। सिर्फ़ नेक मक़सद के लिए अपनी यादगार के तौर पर एलबम में तस्वीरें रखना जाइज़ है, लेकिन इसे फ़ितरत बना लेना और फिर हर सुबह उठकर देखना, सलाम करना बिदअत है।

हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल राजेकी साहब रज़ि. बयान करते हैं कि 1901 ء का ज़िक्र है, मैं हुज़ूर अक़दस अलैहिस्सलाम की बारगाह में हाज़िर था। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने तौहीद बारी तआला पर एक तक़रीर फ़रमाई और फ़रमाया कि बाज़ लोग किसी के एहसान पर अलहमदुलिल्लाह कहे बग़ैर ही जज़ाकल्लाह कह देते हैं, हालाँकि बनज़र ग़ाइर (ऊपरी तौर पर) देखा जाए तो यह अपने अंदर एक गोना शिर्क का पहलू रखता है, क्योंकि एहसान करने वाले की असल ज़ात अल्लाह तआला की है। इसलिए ज़रूरी है कि पहले अल्लाह तआला की तौसीफ़ व तहमीद (प्रशंसा व स्तुति) बयान की जाए और फिर एहसान पर जज़ाकल्लाह कहा जाए।

हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहब क़ादियानी रज़ि. हुज़ूर अलैहिस्सलाम के आख़िरी सफ़र लाहौर की तफ़सीलात पर मुश्तमिल एक मज़मून में लिखते हैं कि वफ़ात से चंद रोज़ पहले हज़रत साहब अलै. की ज़ियारत के लिए मस्तूरात (महिलाएं) तशरीफ़ लाईं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम चूँकि बहुत मसरूफ़ थे, उन्हें जल्दी रुख़सत फ़रमाना चाहा, मगर उन्होंने उज़्र किया और कुछ नसीहत फ़रमाने की दरख़्वास्त की। हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने बावजूद इंतिहाई मसरूफ़ियत के उनकी दरख़्वास्त को क़बूल फ़रमाकर तौहीद की तलक़ीन फ़रमाई और बुत परस्ती से मना फ़रमाया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक और तक़रीर में फ़रमाया था- ईसा मसीह को मरने दो इसमें इस्लाम की ज़िंदगी है। मसीह मुहम्मदी को आने दो कि इसी में इस्लाम की बुज़ुर्गी है।

पस तौहीद का पैग़ाम पहुँचाने और इसे अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाने के लिए भरपूर कोशिश की जाए। यह आज मसीह मुहम्मदी के ग़ुलामों का काम है। अल्लाह तआला हमें इस काम को सरअंजाम देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

ख़ुतबे के आख़िर में हुज़ूर अनवर ने दुनिया के मौजूदा हालात और उम्मत-ए-मुस्लिमा के हवाले से दुआ की तहरीक फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ
سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ أَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا
شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی
الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ
یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब - 18001032131